!! आक्रोश !!

एक आंधी न जाने कहा से आयी ,

मेरे मन में एक आक्रोश सी जलायी,

ऐसा लगता है इस धरा को चीर दू मै,

ऐसा लगे इस अम्बर को झकझोड़ दू मै,

कितना अत्याचार चारो तरफ है फैला ,

कितना भ्रष्टाचार चारो तरफ फैला ,

नारियो कि यहाँनारियो कि यहाँ कोई इज़्ज़त नहीं,

बेटियो कि यहाँ कोई अस्तितव नहीं,

ऐसा लगता है अत्याचारियो का नाश कर दू,

ऐसा लगता है भ्रष्टाचारियो का विनाश कर दू,

माता पिता को बेटे पूछते नहीं,

बुजुर्गो का जैसे कोई वजूद नहीं,

रिश्तो कि मर्यादा को लांघते लोग,

अपने वजूद को मिटाते लोग,

ऐसे बेटो को मार दू मै,

ऐसे लोगो को पछाड़ दू मै,

कितना निर्दयी निर्मम इंसान है बना,

माया ममता से परे है बना,

कितना पाप इस जग में फैला,

कितना अपवाद इस जहा में फैला,

जिसे भी देखो वो पापी बना,

हर कोई अपराधी बना,

ऐसे पापियो का ध्वंश मै कर दू,

ऐसे अपराधियो का विध्वंश मै कर दू,

दया कि कोई गुंजाईश नहीं,

करुणा कि कोई आश नहीं,

धर्मात्मा बने सब झूठ का आँचल ओढ़े है,

परमात्मा बने सब फरेब का दामन थामे है,

ऐसे धर्मतो का अंत मै कर दू ,

ऐसे परमात्माओं को ख़त्म मै कर दू,

एक आक्रोश मेरे मन में जगा ,

इस आक्रोश को नयी राह मै दे दू !